B. A - 1

प्रत्यक्षीकरण
(Perception)

- Dr. B. K.

व्यक्ति को किसी वस्तु का ज्ञान ज्ञानात्मक प्रक्रिया द्वारा होता है। यदि किसी वस्तु का ज्ञान अर्थपूर्ण है तो उसे प्रत्यक्षीकरण कहते है। जब ज्ञान अर्थपूर्ण नहीं होता है, तो उसे भ्रम कहते है। जब बिना किसी वस्तु के उपस्थित होने पर भी उस वस्तु का ज्ञान हो तो उसे विभ्रम कहते है। दूसरे शब्दों में भ्रम में वस्तु उपस्थित रहता है और विभ्रम में वस्तु उपस्थित नहीं रहता है।

कोलिन्स तथा ड्रेवर (1968) ने प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा देते हुए कहा है कि "प्रत्यक्षीकरण वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें किसी वस्तु या परिस्थिति का तत्कालिक ज्ञान होता है और जिसमें एक या सभी ज्ञानेन्द्रियाँ प्रभावित होती है।"

उपरोक्त परिभाषा के आलोक में कहा जा सकता है कि प्रत्यक्षीकरण एक मानसिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा किसी वस्तु का सही ज्ञान प्राप्त होता है। प्रत्यक्षीकरण में एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियाँ शामिल होते हैं:- किसी फूल को देखते हैं तो उस समय हमारी आँखें तथा नाक एक साथ उत्तेजित हो जाते हैं। इसी अर्थ में गेस्टाल्टवादी ने कहा कि किसी उत्तेजना का जो प्रथमज्ञान होता है वह संगठित तथा सार्थक है।

प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रियाएँ

किसी प्रत्यक्षीकरण के प्रगट होने मे निम्नलिखित प्रक्रियाएँ

① ग्राहक प्रक्रिया - किसी भी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण होने के लिए ग्राहक प्रक्रिया का होना आवश्यक है। जब किसी उत्तेजना से हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ या ग्राहक (जैसे- आँख, नाक, कान त्वचा, अथवा जीभ) उत्तेजित होता है तो स्नायु- प्रवाह उत्पन्न होता है जो संवेदी या ज्ञानवाही स्नायु द्वारा मस्तिष्क या कोर्टेक्स के किसी भाग मे उपस्थित होता है जिसके बाद कोर्टेक्स के साहचर्य-क्षेत्र भी उत्तेजित हो जाता है। इस क्षेत्र मे पूर्व अनुभव से उस संवेदी उत्तेजना का लेखा- जोखा किया जाता है तब उस उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण होता है। Ex- जब किसी आवाज से हमारी कान उत्तेजित होता है तो स्नायु प्रभाव उत्पन्न होकर कोर्टेक्स पहुँचता है जहाँ पूर्व अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है, कि ये किसका आवाज है।

② भावात्मक प्रक्रिया - किसी उत्तेजना से जब हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ उत्तेजित होती है तो ना सिर्फ हमे उस उत्तेजना का सही ज्ञान होता है (जिसे प्रत्यक्षीकरण कहते है) होता है बल्कि उस उत्तेजना

ों की उत्पात ... होने के ...

से हमें दुःख या सुख का बोध भी होता है। जब हम किसी मित्र से मिलते हैं तो हमें सुख का अनुभव होता है और जब हम दुश्मन से मिलते हैं तो हमें दुःख का अनुभव होता है, और कभी-कभी हमें तटस्थ भाव का बोध होता है यानि दुःख ना सुख, ऐसा अजनबी के साथ होता है क्योंकि वह ना तो मेरा दोस्त है ना दुश्मन।

③ एकीकरण की प्रक्रिया - जब हम किसी वस्तु को देखते हैं तो उसका भिन्न-भिन्न भाग का ज्ञान हमें पृथक-पृथक नहीं होता है बल्कि संगठित तथा सामूहिक रूप से होता है। जैसे - यदि हम किसी फूल को देखते हैं तो उस फूल का हमें ज्ञान एक साथ संगठित तथा एक त्रित रूप में होता है ना कि पंखुड़ी को अलग और फूल को अलग ज्ञान होता है।

④ प्रतीकात्मक प्रक्रिया - प्रत्यक्षीकरण कि प्रक्रिया में हम देखते हैं कि जब हमें एक वस्तु का ज्ञान होता है तो उससे मिलता-

classmate (3)

Date
Page

जुलता अन्य ~~चीजि~~ चीजों का भी याद आने लगती है। ~~अप~~

Ex- अपने पुराने साथी को देखकर हमें अपने स्कूल - जीवन की याद आने लगती है।

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि प्रत्यक्षीकरण के लिए उक्त चार प्रक्रिया आवश्यक हैं।